VETERINARY TODAY

Popular Article
ISSN: 2583-8288

Published on: 25.12.2023

भारतीय सेही (हिस्ट्रिक्स इंडिका) की स्थिति विश्लेषण एवं संरक्षण

विकास सगर, अमोल रोकड़े, स्पर्श दुबे, वैभव शुक्ला एवं हमजा नदीम
स्कूल ऑफ वाईल्डलाईफ फॉरेंसिक एण्ड हैल्थ,
नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर

भारतीय सेही (इंडियन क्रेस्टेड पॉर्क्यपाइन) भारत का बड़ा वन्य कृंतक है, जो भारतीय उपमहाद्वीप में व्यापक रूप से वितरित है। जिसे स्थानीय तौर पर सेही के नाम से जाना जाता है यह पर्णपाती जंगलों, चट्टानी इलाकों और खुले ग्रामीण इलाकों में रहता है। यह ऊबड़–खाबड़ कृंतक मोटी लंबी कलमों से ढका होता है जिसकी लंबाई 16 इंच तक हो सकती है। इसे प्न्छ रेड लिस्ट में संकटमुक्त जाति के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। वे एकान्तवासी और रात्रिचर हैं सेही की पारिस्थितिकी का अपेक्षाकृत कम अध्ययन किया गया है। यह जमीन पर रहने वाला और बिल खोदने वाला जानवर है। बिल खोदने के लिये आगे के मजबूत पैर इसको पर्याप्त मदद करते हैं। भारतीय सेही के बड़े कृंतक दांत कभी भी बढ़ना बंद नहीं करते हैं, इन्हे धारदार बनाये रखने के लिए छाल, पेड़ों और पत्थरो में घिसता रहता है, कंदों की खुदाई करते समय ये सेही पर्याप्त आवास संशोधक के रूप में कार्य कर सकते हैं। कृषि फसलों में नुकसान करने के कारण उन्हें अपने क्षेत्र के कई हिस्सों में गंभीर कृषि कीट एवं अक्सर उपद्रवी भी माना जाता है परन्तु निवास स्थान में कमी एवं परिवर्तन, अंधाधुन्ध विकास शहरीकरण, कृषि रसायनों की विषाक्तता, दुर्घटना, बीमारीओं, शिकार, अंतरास्ट्रीय बाजार में इसके अंगो एवं क्विल्स की मांग और कम प्रजनन क्षमता के कारण हाल के दशकों में इसकी जनसंख्या गिरावट आ रही है।

विवरण

भारतीय सेही एक बड़ा वन्य कृंतक है, जिसका वजन 10–18 किलोग्राम होता है। इसका शरीर (नाक से पूंछ के आधार तक) 70 से 90 सेमी के बीच का होता है, साथ ही पूंछ अतिरिक्त 8–10 सेमी की होती है। यह संशोधित बालों की कई कलम काटें से ढका होता है जिन्हें क्विल्स कहा जाता है, जिसमें लंबे, पतले बाल छोटे, मोटे बालों की एक परत को कवर करते हैं। कलम भूरे या काले रंग के होते हैं जिन पर बारी–बारी से सफेद और काली धारियाँ होती हैं। वे केराटिन प्रोटीन से बने होते हैं और अपेक्षाकृत लचीले होते हैं। प्रत्येक कलम अपने आधार पर एक मांसपेशी से जुड़ा होता है, जिससे सेही को खतरा महसूस होने पर अपनी कलम को ऊपर उठाने में मदद मिलती है। सबसे लंबी क्विल्स गर्दन और कंधे पर स्थित होती है, जहां कलम जानवर के चारों ओर एक ''स्कर्ट'' बनाती है। ये कलम 51 सेमी तक लंबे हो सकते हैं, जिनमें से अधिकांश की माप 15 से 30 सेमी के बीच होती है। छोटी (20 सेमी) और अधिक कठोर कलमें पीठ और दुम पर घनी तरह से भरी हुई हैं। इन छोटी कलमों का उपयोग संभावित खतरों पर वार करने के लिए किया जाता है।, इसके शरीर के बाल मोटे, मजबूत और नुकीले होते हैं जो इसे परभक्षियों से बचने में मदद करते हैं। इन बालों को सेही के काँटे भी कहते हैं। सेही के शरीर हिलाने पर यह काँटे झड़ते हैं, लेकिन यह धारणा गलत है कि सेही इन काँटों को अपने

दुशमन पर फेंक सकता है। उत्तेजित या भयभीत होने पर, सेही बड़ा दिखने के लिए अपनी कलमों ऊपर उठा लेता है। यह अपनी पूँछ के आधार पर खोखली कलमों को खड़खड़ा सकता है, अपने पैरों को पटक सकता है, गुर्रा सकता है या खतरे में पीछे की ओर आ जाता है। भारतीय कलगीदार सेही की बनावट गठीली होती है और इसकी सतह का क्षेत्रफल और आयतन का अनुपात कम होता है, जो गर्मी संरक्षण में सहायता करता है। इसके पैर चौड़े हैं और लंबे पंजे बिल खोदने के काम आते हैं। भारतीय सेही में गंध की अच्छी समझ और तेज, धारदार कृन्तक होते हैं।

आदर्श आवास और वितरण

भारतीय सेही अफगानिस्तान, आर्मेनिया, अजरबैजान, चीन, जॉर्जिया, भारत, ईरान, इराक, इजराइल, जॉर्डन, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, लेबनान, नेपाल, पाकिस्तान, सऊदी अरब, श्रीलंका तुर्की, तुर्कमेनिस्तान और यमन सहित पूरे दक्षिण पश्चिम और मध्य एशिया में पाए जाते हैं। अपनी लचीली प्यावरणीय सहनशीलता के कारण, भारतीय कलगीदार सेही आवासों की एक विस्तृत श्रृंखला पर कब्जा कर लेते हैं। वे चट्टानी पहाड़ियों में भी पाये जाते हैं, लेकिन उ णकटिबंधीय और समशीतो ण झाड़ियों, घास के मैदानों, जंगलों, वृक्षारोपण और बगीचों में भी आम हैं। रात्रिचर जानवर के रू में, भारतीय सेही अपना दिन का समय अपनी मांद में बिताते हैं। वे ायद ही कभी अकेले रहते हैं, लेकिन हमेशा अकेले ही भोजन जुटाते हैं। परिपक्व और दूध छुड़ा चुके युवा दोनों औसतन प्रति रात लगभग 7 घंटे भोजन खोजने में बिताते हैं। सर्दियों के दौरान, शिकारियों से बचने के लिए वे चांदनी से बचते हैं। व र्ा की इस अवधि के दौरान, वे कभी–कभी अपनी मांदों से बाहर आते हैं और उन्हें धूप सेंकते हुए देखा जा सकता है। गर्मियों के दौरान, वे अपनी मांद के करीब रहकर अपनी रक्षा करते हैं और आमतौर पर चांदनी से बचते नहीं हैं। ये सेही या तो प्राकृतिक गुफाओं में रहते हैं या खुद बिल खोदते हैं। चिढ़ने पर, वे आम तौर पर अपने ारीर पर पंख उठाते हैं और अपनी पूंछ पर खोखले कांटों को कंपन करते हैं। यदि ये क्रियाएं काम नहीं करती हैं, तो वे पहले प्रतिद्वंद्वी पर हमला करते हैं। भारतीय सेही निपुण तैराक होते हैं। हालाँकि, वे न तो अच्छे पर्वतारोही हैं और न ही कूदने वाले, इसलिए वे जमीन पर या उसके नीचे रहना पसंद करते हैं। इसकी पूंछ बहुत छोटी होती है

आहार

सेही का मुख्य भोजन पौधों की सामग्री जैसे जड़ें, बीज, कंद, कलियाँ, छोटी शाखाएँ, पत्तियाँ और जंगली फल होते हैं। भारतीय क्रेस्टेड सेही का आहार बहुत व्यापक और अधिकतर शाकाहारी होता है। जो पत्ती, घास और छोटे पौधे खाता है। वे विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक और कृषि पौधों की सामग्री का उपभोग करते हैं, जिनमें जड़ें, फल, अनाज, और कंद, साथ ही कीड़े शामिल हैं। जिसे अक्सर रात में भोजन करते हुए देखा जाता है, जो पौधों, फलों और जड़ों को खाते समय घुरघुराने की आवाज निकालता है। सीकल डाइजेस्टर होने के कारण वे निम्न गुणवत्ता वाले चारे का भी उचित उपयोग कर लेते हैं। इनके पास वसा भंडार करने की भी क्षमता होती है जिसके कारण विभिन्न प्रकार के मौसमो में अनुकूलन कर सकते है।

व्यवहार

अन्य सेही की तरह, भारतीय सेही रात्रिचर है। वे सर्दियों के महीनों में चांदनी से बचते हैं, जो शिकार से बचने की एक रणनीति होती है। हालाँकि, गर्मी के महीनों के दौरान वे चांदनी से बचते नहीं हैं संभवतः क्योंकि इस दौरान चारा खोजने के लिए कम अंधेरे घंटे होते हैं बल्कि इसके बजाय वे अपनी मांद के करीब रहते हैं। दिन के दौरान, वे अपनी मांद में रहते हैं, लेकिन पूरे सर्दियों में, वे कभी–कभी दिन के उजाले के दौरान धूप सेंकने के लिए अपनी मांद से बाहर निकलते हैं। भारतीय सेही अर्धजीवाश्म भी माना जाता है। वे प्राकृतिक गुफाओं या खोदे गए बिलों

में रहते हैं चूँकि वे अच्छी तरह से चढ़ या कूद नहीं पाते, इसलिए वे अपना अधिकांश जीवन जमीन पर या उसके नीचे बिताते हैं। सेही के प्राक्रतिक शिकारियों में तेंदुआ बाघ, भेड़िये, लकड़बग्घे, जंगली कुत्ते, मगरमच्छ आदि शामिल हैं।

प्रजनन

मादा और नर में यौन परिपक्वता लगभग २५ तथा २६ महीने में आती है। सेही फरवरी और मार्च में प्रजनन करते हैं। गर्भावस्था औसतन 240 दिनों तक चलती है। एक मादा प्रति वर्ष दो से चार संतानों को जन्म देती है। बच्चे खुली आँखों के साथ पैदा होते हैं और छोटे, मुलायम बालों से ढके होते हैं जो जन्म के कुछ ही घंटों के भीतर सख्त हो जाते हैं। जन्म के 13–19 सप्ताह बाद शिशुओं को पूरी तरह से दूध पिलाना बंद कर दिया जाता है, लेकिन वे लगभग 2 साल की उम्र तक यौन परिपक्वता तक माता–पिता और भाई–बहनों के साथ मांद में ही रहते हैं।

जनसंख्या का खतरा

कुछ क्षेत्रों में भारतीय सेही का उनके मांस के लिए शिकार किया जाता है। कई स्थानों पर यह इतना सामान्य है कि इसे एक कीट माना जाता है। दूसरी ओर इन कृंतकों को वर्तमान में शहरीकरण, बुनियादी ढांचे के विकास और कीटनाशकों के उपयोग के कारण निवास स्थान में गिरावट का सामना करना पड़ रहा है। वैज्ञानिकों ने सेही में एक कवक रोग की खोज की है जो अक्सर घातक होता है और सेही की आबादी को दीर्घकालिक स्वास्थ्य प्रभाव पड़ सकता है। यह कवक जूनोटिक है जिसका अर्थ है कि यह जानवरों से मनुष्यों में फैल सकता है, लेकिन साथ ही यह भी सामने आ रहा है कि कई अन्य फंगल रोग दुनिया भर में अन्य वन्यजीव आबादी को प्रभावित कर रहे हैं, हाल के दशकों में इसकी जनसंख्या गिरावट आ रही है, जिसका संभावित कारण निवास स्थान में कमी एवं परिवर्तन, अंधाधुन्ध, विकास कृषि रसायनों की विषाक्तता, और उनकी कम प्रजनन क्षमता भी है।

संरक्षण

भारतीय क्रेस्टेड सेही को 2002 तक भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 के तहत संरक्षित किया गया है चूंकि यह बगीचों और कृषि फसलों के लिए विनाशकारी है, इसलिए इसका व्यापक रूप से शिकार किया जाता है। उपभोग और औषधीय उपयोग के लिए इसका व्यापार किया जाता है। आवासों और खाद्य प्रकारों की एक विस्तृत श्रृंखला के अनुकूल होने के कारण, भारतीय सेही को IUCN रेड लिस्ट में सबसे कम चिंता वाली सूची में सूचीबद्ध किया गया है। इसकी जनसंख्या स्थिर है और गंभीर रूप से कमी नहीं आयी है। सेही विशिष्ट कलमों से ढके शरीर के लिए जाने जाते हैं। वे अपने शाकाहारी आहार के माध्यम से पौधों के विकास को नियंत्रित करने में मदद करके उनके पारिस्थितिक तंत्र में एक भूमिका निभाते हैं, और पारिस्थितिक तंत्र में विभिन्न शिकारियों के लिए महत्वपूर्ण शिकार हैं।

निष्कर्ष

सेही दिलचस्प और अनोखे जीव हैं जो अपनी प्रभावशाली कलमों और विशिष्ट उपस्थिति के लिए जाने जाते हैं। ये अपने पारिस्थितिक तंत्र में में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और अपनी आहार आदतों के माध्यम से बीज फैलाव में योगदान करते हैं। सेही के पास आत्मरक्षा के लिए विभिन्न अनुकूलन होते हैं, सेही के संरक्षण के प्रयास उनके आवासों के संरक्षण, मानव–वन्यजीव संघर्ष को कम करने के साथ उनका आखेट को रोकना, उनकी संरक्षण आवश्यकताओं के बारे में शिक्षा और जागरूकता उनके निरंतर कल्याण के लिए अति महत्वपूर्ण है।